अध्याय 10

अय्यूब का उत्तर (भाग 2)

अध्याय 9 में परमेश्वर की बात करने से अय्यूब उसी *से* बात करने *की* ओर मुड़ा। जिस प्रकार से अध्याय 9 में उत्तम पुरुष सर्वनाम प्रमुख है, उसी प्रकार से इस अध्याय 10 में अय्यूब के परमेश्वर को सीधे सम्बोधन पर मध्यम पुरुष सर्वनाम वचन ''तुझे,'' ''तेरी,'' ''तेरे'' और ''तू'' प्रमुखता से मिलता है।[1]

''मेरा प्राण जीवित रहने से उकताता है'' (10:1-7)

[1]''मेरा प्राण जीवित रहने से उकताता है; मैं स्वतंत्रता पूर्वक कुड़कुड़ाऊँगा; और मैं अपने मन की कड़वाहट के मारे बातें करूँगा। [2]मैं परमेश्वर से कहूँगा, मुझे दोषी न ठहरा; मुझे बता दे कि तू किस कारण मुझ से मुकद्दमा लड़ता है? [3]क्या तुझे अन्धेर करना, और दुष्टों की युक्ति को सफल करके अपने हाथों के बनाए हुए निकम्मा जानना भला लगता है? [4]क्या तेरी आँखें देहधारियों की सी हैं? और क्या तेरा देखना मनुष्य का सा है? [5]क्या तेरे दिन मनुष्य के दिन के समान हैं, या तेरे वर्ष पुरुष के समयों के तुल्य हैं, [6]कि तू मेरा अधर्म ढूँढ़ता, और मेरा पाप पूछता है? [7]तुझे तो मालूम ही है कि मैं दुष्ट नहीं हूँ, और तेरे हाथ से कोई छुड़ानेवाला नहीं!''

आयत 1. ''मेरा प्राण जीवित रहने से उकताता है।'' दुःख की कड़वाहट भरे दिन और बड़े विनाश की यादों ने, अय्यूब को दुःखी कर रखा था। **''मैं स्वतंत्रता पूर्वक कुड़कुड़ाऊँगा।''** खाट ने अय्यूब को कोई शांति नहीं दी (7:13); न ही वह अपनी शिकायत को भूल पाया (9:27)। निरंतर पीड़ा के कारण वह **अपने मन की कड़वाहट के मारे बातें** करने लगा।

आयत 2. बातचीत में यहां पर अय्यूब सीधा परमेश्वर के साथ आमने-सामने हो गया। अय्यूब ने अपने प्रश्न केवल उसी के सामने रखे जो जीवन की जटिलताओं के उत्तर दे सकता था। **''मैं परमेश्वर से कहूँगा, मुझे दोषी न ठहरा।''** मूलतया अय्यूब ने कहा, ''मुझ पर यह दोष लगाना बंद कर दे कि मैं दुष्ट हूं।'' वास्तविकता में परमेश्वर ने यह नहीं किया था। परन्तु अय्यूब ने उसी पूर्वधारणा को दोहराया जो उसके दोस्तों में थी कि धर्मी फलते फूलते हैं और दुष्ट लोग दुःख उठाते हैं।

''मुझे बता दे कि तू किस कारण मुझ से मुक़द्दमा लड़ता है?'' वचन में मूलतया कहा गया है, ''मुझे समझा दे कि तू मेरे साथ क्यों लड़ता है।'' अय्यूब अपने विरुद्ध लगे आरोप की सफ़ाई चाहता था। जेम्स स्ट्राहन ने लिखा है कि अध्याय 10 में अय्यूब ''अलगाव के चरम बिंदु पर पहुंच जाता है।''[2] उसे केवल इतना ही नहीं लगा कि वह परमेश्वर से अलग हो गया था

बल्कि उसे यह भी लगा कि परमेश्वर उन दुःखों के द्वारा जो उसके ऊपर पड़े थे उसे अन्यायपूर्ण दण्ड दे रहा है।

मुक़द्दमे में बातचीत आगे बढ़ने से वादियों की भाषा अधिक स्पष्ट हो जाती है। ''दोषी [दुष्ट के रूप में]'' (*rasha', राशा*) और ''मुक़द्दमा'' (*rib, रिब*) कानूनी संकेत देते हैं (9:3 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 3. ''क्या तुझे अन्धेर करना, भला लगता है?'' ''अंधेर'' (*'ashaq, आशक़*) शब्द का अर्थ किसी के साथ ''गलत करना'' ''बलपूर्वक छीनना'' या ''निर्दयता से व्यवहार करना'' है। यह ''सामाजिक अन्याय'' का सूचक है, ''जो आम तौर पर हिंसा का कारण बनता है।''[3] **''और दुष्टों की युक्ति को सफल करके।''** ''सफल करके'' (*yapa', यपा*) का संकेत ''महिमा करना'' हो सकता है; KJV ''चमकाना'' है। अय्यूब परमेश्वर पर दुष्टों को बचाने और धर्मियों को दबाने का आरोप लगाने ही वाला था।

आयतें 4-6. अय्यूब ने परमेश्वर पर **मनुष्य का सा** देखने का यानी ऊपर ऊपर से अर्थात किसी के मन को देखने के बजाय बाहरी रूप को देखने का आरोप लगाया (देखें 1 शमूएल 16:7)। **''कि तू मेरा अधर्म ढूँढ़ता, और मेरा पाप पूछता है?''** ''अधर्म'' (*'awon, आवोन*) का अनुवाद ''दोष'' भी हो सकता है। ''ढूंढ़ता'' (*baqash, बाक़ाश*) का अर्थ यहां पर मांग करने या हिसाब मांगने के विचार वाला है (देखें उत्पत्ति 31:39; 43:9; 1 शमूएल 20:16; 2 शमूएल 4:11; यहेजकेल 3:18, 20; 33:8)।

आयत 7. ''तुझे तो मालूम ही है कि मैं दुष्ट नहीं हूँ।'' अय्यूब को अपने मन में यह मालूम था कि परमेश्वर वह नहीं था जो वह उसे बता रहा था, पर फिर भी उसे समझ नहीं आ रहा था कि उस पर दुःख क्यों आया। **''तेरे हाथ से कोई छुड़ानेवाला नहीं!''** ''छुड़ानेवाला'' शब्द का अनुवाद ''छुटकारा'' हो सकता है। यहां पर इस्तेमाल हुआ इब्रानी कृदंत (*matstsil, मटस्टिल*) ''छुड़ाने वाले'' के वर्णन के लिए 5:4 में भी इस्तेमाल हुआ है। उसकी सहायता के लिए किसी के आने की उसकी आवश्यकता का वर्णन करते अन्य शब्द हैं: ''बिचवई'' (9:33), ''साक्षी'' (16:19), ''गवाह'' (16:19) और ''छुड़ाने वाला'' (19:25)।

''मुझे परमेश्वर के हाथों ने सृजा है'' (10:8-17)

8''तू ने अपने हाथों से मुझे ठीक रचा है और जोड़कर बनाया है; तौभी मुझे नष्ट किए डालता है। 9स्मरण कर कि तू ने मुझ को गूँधी हुई मिट्टी के समान बनाया, क्या तू मुझे फिर धूल में मिलाएगा? 10क्या तू ने मुझे दूध के समान उण्डेलकर, और दही के समान जमाकर नहीं बनाया? 11फिर तू ने मुझ पर चमड़ा और मांस चढ़ाया और हड्डियाँ और नसें गूँथकर मुझे बनाया है। 12तू ने मुझे जीवन दिया, और मुझ पर करुणा की है; और तेरी चौकसी से मेरे प्राण की रक्षा हुई है। 13तौभी तू ने ऐसी बातों को अपने मन में छिपा रखा; मैं जान गया कि तू ने ऐसा ही करने की ठान ली थी। 14यदि मैं पाप करूँ, तो तू उसका लेखा लेगा; और अधर्म करने पर मुझे निर्दोष न ठहराएगा। 15यदि मैं दुष्टता करूँ तो मुझ पर हाय! यदि मैं धर्मी बनूँ तौभी मैं सिर न उठाऊँगा, क्योंकि मैं अपमान से भरा हुआ हूँ और अपने

दु:ख पर ध्यान रखता हूँ। 16और चाहे सिर उठाऊँ तौभी तू सिंह के समान मेरा अहेर करता है, और फिर मेरे विरुद्ध आश्चर्यकर्म करता है। 17तू मेरे सामने अपने नये नये साक्षी ले आता है, और मुझ पर अपना क्रोध बढ़ाता है; और मुझ पर सेना पर सेना चढ़ाई करती है।''

आयतें 8-11. परमेश्वर के काम के वर्णन के लिए अय्यूब ने कई अलंकारों का इस्तेमाल किया। परमेश्वर को **मिट्टी** में से कुम्हार के मनुष्य को बनाने के रूप में दिखाया गया है, जो कि पवित्र शास्त्र में आम रूपक है (10:8, 9)। इसे यशायाह (यशायाह 29:16; 45:9; 64:8), यिर्मयाह (यिर्मयाह 18:4-6), और प्रेरित पौलुस (रोमियों 9:20, 21) के द्वारा इस्तेमाल किया गया। आयतें 10 और 11 गर्भधारण से जन्म होने की प्रक्रिया को **नहीं** बनने से मिलाती हैं। कोख में बच्चे पर **चमड़ा और मास** और **हड्डियां और नसें** गूंथी जाती हैं।

आयत 12. **''तू ने मुझे जीवन दिया, और मुझ पर करुणा की है।''** निराशा के अंधकार में भी अय्यूब परमेश्वर के अनुग्रहकारी प्रबंधों को मान सकता था। पुस्तक में यहां पहली बार ''करुणा'' (*chesed, चेसेड*) परमेश्वर के लिए इस्तेमाल हुआ है।[4] यह वह शब्द है जो अपने लोगों के लिए परमेश्वर की वाचा के प्रेम को बताता है। यरूशलेम के विनाश पर यिर्मयाह ने गहरी निराशा में परमेश्वर के विवरण के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल किया: ''यह यहोवा की महाकरुणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है। प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान है। मेरे मन ने कहा, यहोवा मेरा भाग है, इस कारण मैं उस में आशा रखूंगा'' (विलापगीत 3:22-24)।

''तेरी चौकसी से मेरे प्राण की रक्षा हुई है।'' सताव की निराशा में पड़े लोगों से प्रेरित पतरस ने आग्रह किया कि ''अपनी सारी चिंता उसी पर डाल दो क्योंकि उसे तुम्हारी परवाह है'' (1 पतरस 5:7; NIV)।

आयतें 13-17. अय्यूब का ध्यान तुरन्त अपनी दु:खद स्थिति की ओर मुड़ गया। परमेश्वर के हाथ से बचने का कोई तरीका नहीं था। **दुष्टता** करने वाला था या **धर्मी**, उसके लिए कोई बचाव या राहत नज़र नहीं आती थी। अय्यूब ने मान लिया कि परमेश्वर उसके पापों पर नज़र रखने के लिए उसकी चौकसी कर रहा था, और **सिंह के समान** उसका **अहेर** करने के लिए और उसके **विरुद्ध आश्चर्यकर्म कर**ने को तैयार था। इसीलिए अय्यूब को केवल यही लगा कि **मुझ पर सेना पर सेना चढ़ाई करती है**।

''हे परमेश्वर मुझे अकेला छोड़ दे'' (10:18-22)

[18]''तू ने मुझे गर्भ से क्यों निकाला? नहीं तो मैं वहीं प्राण छोड़ता, और कोई मुझे देखने भी न पाता। [19]मेरा होना न होने के समान होता, और पेट ही से कब्र को पहुँचाया जाता। [20]क्या मेरे दिन थोड़े नहीं? मुझे छोड़ दे, और मेरी ओर से मुँह फेर ले, कि मेरा मन थोड़ा शान्त हो जाए [21]इससे पहले कि मैं वहाँ जाऊँ, जहाँ से फिर न लौटूँगा, अर्थात् अन्धियारे और घोर अन्धकार के देश में, जहाँ अन्धकार ही अन्धकार है; [22]और मृत्यु के अन्धकार का देश जिस में सब कुछ गड़बड़ है; और जहाँ प्रकाश भी ऐसा है जैसा अन्धकार।''

आयतें 18, 19. अय्यूब ने फिर से वही इच्छा व्यक्त की जो उसने अध्याय 3 में जोड़ी थी। **उसने पेट ही से कब्र को पहुँचाया** जाने अर्थात गर्भपात होने या पैदा होते ही मर जाने और फिर दफ़ना दिए जाने (3:11, 16) को अपनी वर्तमान स्थिति से बेहतर माना।

आयत 20. अय्यूब चाहता था कि परमेश्वर उसे **छोड़ दे**। उसने तर्क दिया कि परमेश्वर के दूर होने से पृथ्वी पर वह अपने अंतिम दिनों के समय **थोड़ा शांत हो** सकता था।

आयतें 21, 22. अय्यूब ने पहले मृत्यु को वह जगह बताया था जहां ''दुष्ट लोग फिर दुःख नहीं देते'' और ''थके मांदे विश्राम पाते हैं'' (3:17), और जहां से व्यक्ति ''अपने घर को फिर लौट न आएगा'' (7:10)। अब उसने यह जोड़ दिया कि यह वह जगह है **जहाँ अन्धकार ही अन्धकार है**। ''अंधकार ही अंधकार'' (*tsalmaweth, त्सामावेथ*) का अनुवाद ''मृत्यु की छाया'' भी हो सकता है[5] (3:5 पर टिप्पणियां देखें)। रॉबर्ट एल. आल्डन ने टिप्पणी की है कि ''अय्यूब की शिकायत अंधकार के लिए पर्यायवाची शब्दों के साथ बंद हो जाती है।''[6]

मसीही लोगों के लिए नज़रिया कितना अलग है! यीशु के जी उठने के द्वारा हमें परमेश्वर के साथ अनन्तकाल की आशा मिली है! हमें यीशु का वायदा मिला है:

> तुम्हारा मन व्याकुल न हो; परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो। जहां मैं जाता हूं तुम वहां का मार्ग जानते हो (यूहन्ना 14:1-4)।

यीशु उनके लिए स्वर्ग को तैयार कर रहा है जो अपने आपको इसके लिए तैयार कर रहे हैं। हमें अपने आप से यह पूछना आवश्यक है कि क्या हमने प्रभु की आज्ञा को मान लिया है और उसकी सेवा वफ़ादारी से की है?

प्रासंगिकता

जब हमारी हालत बहुत बुरी हो जाती है (अध्याय 10)

एक समय था जब अय्यूब बहुत ही खुशहाल था। वह परमेश्वर से डरता और हर दिन उसके लिए जीता था। अय्यूब की एक पत्नी और दस बच्चे थे और वे उसके लिए एक आशीष थे (भजन संहिता 127:3-5)। अय्यूब अपने परिवार के निकट ही रहता था और यह भी एक बहुत बड़ी आशीष थी। परमेश्वर ने अय्यूब को बहुत सी सम्पत्ति और अच्छी सेहत की आशीष दी थी। अय्यूब के लिए जीवन अच्छा था।

एक दिन उसका जीवन सदा के लिए बदल गया, जब उसके आस पास की हर चीज़ का नाश हो गया। अय्यूब की सम्पत्ति, नौकर और बच्चे सब छिन गए। बाद में उसका स्वास्थ्य भी जाता रहा। उसकी पत्नी भी दुःखी थी। अपने दुःख में वह उसे प्रोत्साहन नहीं दे पाई थी। उसके मित्रों ने उसकी खराई पर सवाल उठाया और उस पर किसी गुप्त पाप के होने का आरोप लगाया। परमेश्वर स्वयं खामोश रहा और उसने अय्यूब की प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं दिया। अय्यूब, जो

कि चट्टान सरीखे मज़बूत विश्वास वाला व्यक्ति था, अब उसकी हालत बुरी हो गई थी। उसकी हालत बुरी क्यों हुई थी? इसके कई कारण समझे जाते हैं: (1) अय्यूब बड़ी भावनात्मक पीड़ा में होने के कारण दु:खी था। (2) अय्यूब अत्यधिक शारीरिक पीड़ा में भी था। (3) उसके मित्र भी उसे तकलीफ़ दे रहे थे। (4) अंत में अय्यूब को समझ नहीं आया कि परमेश्वर ने उसके साथ इतनी भयंकर घटनाएं क्यों होने दीं।

आज के मसीही लोग जो वफ़ादारी से परमेश्वर की सेवा करते हैं, दु:ख सहने और त्रासदी से मुक्त नहीं हैं। जब हमारी हालत बुरी हो जाए तो हमें क्या करना चाहिए?

पहले तो हमें याद रखना चाहिए कि ऊपर को देखना है। अय्यूब बुरी तरह से परेशान था इसलिए यह समझा जा सकता है कि वह अपने ऊपर ही ध्यान देता था। इन सब विनाशकारी घटनाओं और गुप्त पाप के आरोपों ने अय्यूब को दु:खी कर दिया था। उसके मित्र एलीपज ने उसे कोई शांति नहीं दी थी और उसके मित्र बिलदद ने उसे उपदेश दे दिया था। किसी भी मित्र ने अय्यूब को शांति या वह समझ नहीं दी, जिसकी उसे आवश्यकता थी। इसे समझा जा सकता है, परन्तु उसे यह कहते हुए सुनना बुरा लगता है कि ''मेरा प्राण जीवित रहने से उकताता है'' (10:1)। उस हाथ के कारण जिसने उसके साथ ऐसा किया था, अय्यूब चिड़चिड़ा हो गया था (10:3), और अब वह अपनी सारी शिकायतों के लिए ''स्वतन्त्रतापूर्वक बातें'' करने को तैयार था (10:1, 2)। अय्यूब बहुत बुरी हालत में था और उसकी सारी आशा जाती रही थी (7:6)। तीतुस 1:2 हमें बताता है कि हम ''उस अनन्त जीवन की आशा'' पा सकते हैं ''जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने जो झूठ बोल नहीं सकता सनातन से की है।'' जब हमारी हालत बहुत बुरी हो तो हमें याद रखना चाहिए कि ऊपर को देखना है।

दूसरा हमें याद रखना चाहिए कि सवाल करने में कोई बुराई नहीं है। कड़वाहट से भरे अय्यूब ने अपने प्रश्न और शिकायतें परमेश्वर के सामने रखीं। वचन यह बताता है कि परमेश्वर नहीं चाहता कि उसके बच्चे बुड़बुड़ाएं या शिकायत करें (गिनती 14:35-37), परन्तु कम से कम अय्यूब अपने सवाल और अपनी शिकायतें उसके पास लेकर तो गया जो उनसे निपट सकता था। अय्यूब ने अपने मित्र के तर्क पर विचार किया कि परमेश्वर ही उसे दण्ड दे रहा होगा, इसलिए अय्यूब ने जानना चाहा कि परमेश्वर उसके विरुद्ध क्यों है। मन ही मन, अय्यूब को पता था कि वह दोषी नहीं है, पर उसे यह समझ नहीं आया कि परमेश्वर ने उसे छुड़ाया क्यों नहीं (10:7)। अय्यूब को लगा कि जैसे वह मरने को है (10:21), और उसने कहा कि मरने से पहले वह ''थोड़ा शांत'' होना चाहता है (10:20)। अय्यूब को अच्छा लगना था यदि मरने से पहले उसके कुछ सवालों के जवाब मिल जाते और हम सब इस बात को समझ सकते थे। फिर अय्यूब ने परमेश्वर से एक के बाद एक सवाल पूछे: ''क्या तू मुझे नाश करेगा?'' (10:8); ''क्या तूने मुझे दूध के समान उण्डेलकर और दही के समान जमाकर नहीं बनाया?'' (10:10); ''तू ने मुझे गर्भ से क्यों निकाला?'' (10:18); और यह कि ''क्या वह मुझे थोड़े दिन अकेला नहीं छोड़ देगा?'' (10:20)। एक के बाद एक, अय्यूब अपना सारा क्रोध, कड़वाहट और सवाल सब परमेश्वर की ओर फैंकता जा रहा था।

हम में से बहुतों ने क्रोध में कई बातें कहीं भी हैं और परमेश्वर से कभी न कभी सवाल भी किए हैं। परमेश्वर अय्यूब के सब प्रश्नों का उत्तर दे सकता था, फिर भी उसने उस समय

अय्यूब को उत्तर नहीं दिया। प्रश्न पूछने से अय्यूब को एक और दिन जीवित रहने की सामर्थ मिल गई और इससे अय्यूब उस दिन की प्रतीक्षा करने लगा जब उसकी सब परीक्षाएं खत्म हो जानी थीं। जब हमारी हालत बहुत बुरी होती है तो हमें याद रखना चाहिए कि सवाल करने में कोई बुराई नहीं है।

तीसरा, हमें बड़ी तस्वीर को याद रखना चाहिए। हम चाहे अध्याय 10 में आ गए हैं, पर हमें याद रखना चाहिए कि पर्दे के पीछे क्या हो रहा था। अय्यूब को यह पता नहीं था कि पर्दे के पीछे क्या चल रहा है, जो हमें अध्याय 1 और 2 में बताया गया है। अय्यूब को इन सब घटनाओं का कोई पता नहीं था क्योंकि शैतान ने यहोवा को चुनौती दी थी। शैतान की सोच यह थी कि मनुष्य परमेश्वर के लिए जीना, उसके लिए सेवा करना या ''परमेश्वर का भय'' मानना बिना लाभ के नहीं चुनेगा (1:9)। शैतान का मानना था कि यदि परमेश्वर अय्यूब से अपनी रक्षा और आशिषें हटा दे तो अय्यूब परमेश्वर में अपने विश्वास को त्याग देगा। यदि अय्यूब को यह पता होता, तो अय्यूब की वफ़ादारी के द्वारा परमेश्वर को महिमा नहीं मिलनी थी।

कोई भी ऐसी परीक्षाओं में नहीं गुज़रना चाहता जो अय्यूब के ऊपर पड़ी थीं और अंत में उसकी हालत बहुत बुरी हो गई। यदि ऐसा कुछ हो जाए, तो बड़ी तस्वीर को याद रखें। रोमियों 5:3-5 कहता है कि ''हम *क्लेशों* में भी घमण्ड करें, यह जानकर कि क्लेश से *धीरज,* और धीरज से *खरा निकलना,* और खरे निकलने से *आशा* उत्पन्न होती है; और आशा से लज्जा नहीं होती।'' इन सब *क्लेशों* में से निकलकर अय्यूब ने *धीरज* सीखा। वास्तव में उसका नाम इस गुण का पर्याय है (याकूब 5:11; NIV)। उन सब क्लेशों से निकलकर अय्यूब का *चरित्र* भी शुद्ध और *साबित* हो गया। इसके अलावा अय्यूब की वफ़ादारी से परमेश्वर की महिमा हुई। हमें परमेश्वर में अय्यूब की गहरी *आशा* का पता चलता है जब हम 19:25-27 में उसकी टिप्पणियों को पढ़ते हैं।

एफ. मिलस

टिप्पणियां

[1]अध्याय 10 में अपने के सम्बन्ध में ''तू,'' ''तुझे'' और ''तेरे/तेरी'' अठाइस बार मिलता है। [2]जेम्स स्ट्राहन, *द बुक ऑफ़ अय्यूब* (एडिनबर्ग: टी. ऐंड टी. क्लार्क, 1913), 104. [3]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 184; देखें व्यवस्थाविवरण 19:13; व्यवस्थाविवरण 24:14; 1 शमूएल 12:3, 4; नीतिवचन 14:31; 22:16. [4]देखें 6:14 जहां तीनों मित्रों को किए गए प्रश्न में ''कृपा'' (*chesed, चेसेड*) शब्द का इस्तेमाल हुआ है। एच. एच. रोअले ने लिखा है कि अंग्रेज़ी भाषा में संक्षेप में इस शब्द का समानांतर नहीं है। इसका अनुवाद ''वफादारी,'' ''वाचा का प्रेम'' या ''दयालुता'' हो सकता है। उसने कहा कि कई बार यह दया के कारण आरम्भ किए जाने का और कई बार इसके जवाब का संकेत देता है। (एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ [ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970], 102-3.) [5]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर ऐंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू ऐंड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 853. [6]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 140.